

ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान बिसवाँ सीतापुर



"" सार का सार ""

[भेद अध्यात्म]

**चार- चार में है बटाँ, यह पूरा अध्यात्म!
लोक चार, युग चार हैं, दृष्टि चार एक आत्म!!**

**अध्ययन करो शरीर का, इसमें चार है खण्ड!
तन, मन, सुरत है तीन पद, चौथा आत्म अखण्ड!!**

**पद है तीन शरीर में, चौथा पद है विलुप्त!
चौथा पद यदि खोज लो, जीव तभी हो मुक्त!!**

**चौथे पद को खोजकर, सन्मुख होवे जीव!
आत्म, परमात्म यही, जीव से होवे पीव!!**

**भक्ती चार प्रकार की, तन, मन, सुरत है आत्म!
तीन है इनमें छोड़ना, जानों केवल आत्म!!**

**मैं पद इनमें तीन है, इन्हें छोड़ना होय!
केवल आत्म जानना, यही सत्यपद होय!!**

**इनमें मैं सब कर रहा, कुछ न करता जीव!
जब मैं है, तब हरि नहीं, मुक्त न होवे जीव!!**

शक्ती चार प्रकार की, तन, मन, सुरत है आत्म!

भौतिक और साधना, योग और आध्यात्म!!

सुनो कहानी जीव की, जानो इसका भेद!

दोनों आँखे बन्द है, जानो आत्म अभेद!!

अंश आत्मा का यही, यहाँ बन गया जीव!

प्राण, वायु का रूप है, तत्व बना है जीव!!

बिना तत्व की आत्मा, तत्व का मानव जीव!

मन के संग में रह रहा, मन संचालित जीव!

प्राण वायु तो तत्व है, आत्म होय अतत्व!

तत्व से फिर है लौटना, बनना इसे अतत्व!!

जीव और मन दो मुख्य है, मनुज शरीर में जान!

इन दोनों को बदलना, यह अध्यात्म है जान!!

ENLIGHTENMENT मन का हो, जीव को बनना आत्म!

दोनों मिलकर एक हो, यही तो है अध्यात्म!!

दोनों आँखे भी खुले, जीव अवस्था पीव!

संचालन मन का हटे मुक्त, मोक्ष हो जीव!!

मन कागा से हंस हो गया, जीव बन गया आत्म!

तीन लोक बस जीव के, जीव है सन्मुख आत्म!!

"चार लोकों का भेद "

आत्मा, परमात्मा एक है, चेतन सत्य है जान!
हरि, ईश्वर, सतगुरु यही, यही है पद निर्वाण!!

आत्मा से ब्रम्ह बना, ब्रम्ह से बनी माया!
माया से संसार बना, चौथा लोक अमाया!!

माया, मन, मैं तीन पद, तन , मन , सुरत है जान!
चौथा पद अद्वैत पद, लक्ष्य जीव का मान!!

चार लोक में है बटाँ, जानों इसका भेद!
तीन लोक है सृष्टि के, चौथा आत्म अभेद!!

यथा पिंड ब्रम्हाण्ड सो, यही बताते वेद!
काया ही में जान लो, चार लोक का भेद!!

पहला लोक शरीर है, मन है दूसरा लोक!
लोक तीसरा सुरत है, आत्मा चौथा लोक!!

सात स्वर्ग मन है यही, इसमें सात प्रकाश!
सभी देवता इसी में, इसमें प्रकृति निवास!!

पहले लोक में जीव है, आत्मा चौथे लोक!
दोनों चेतन हैं यही, जानों चौथा लोक!!

[" सभी लोकों का आधार "]

सूक्ष्म आधार है स्थूल का, यही भेद आधार!
हमें है उसको जानना, जो सबका आधार!!

आधार है पहले लोक का, यही दूसरा लोक!
गाय सींग और शेष भी, यही दूसरा लोक!!

मन ही दूसरा लोक है, शिव है, काल है जान!
नंदी गाय और सर्प भी, शिव के साथ में जान!!

आधार दूसरे लोक का, यही तीसरा लोक!
दृष्टा, सृष्टा पुरुष है, मैं है सुरत का लोक!!

आधार तीसरे लोक का, यह है चौथा लोक!
किलिया, धुरी और केन्द्र है, आत्म यही अलोक!!

परिधि से आना केन्द्र पर, यही जीव का लक्ष्य!
दृष्टि जो बदले जीव की, आत्म हो प्रत्यक्ष!!

["दृष्टि बदलना" जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि]

पहला लोक शरीर है, आँख है इसकी दृष्टि!
केवल संसार ही दीखता, बाकी दिखे न सृष्टि!!

आँख तीसरी से दिखे, सात स्वर्ग यह जान!
यह तो मन की आँख है, लोक दूसरा जान!!

प्रज्ञा चक्षु दृष्टि से, ब्रम्ह लोक को जान!
लोक तीसरा यही है, सुरत लोक पहिचान!!

दृष्टि विवेक की खोलना, यही जीव का लक्ष्य!
इसी दृष्टि से ही दिखे, चौथा लोक प्रत्यक्ष!!

" "जीव की आवश्यकता " "

दृष्टि विवेक की चाहिए, विद्या, सुमति ज्ञान!
मोक्ष, मुक्ति सब चाहिए, धुरपद और निर्वाण!!

विजय प्रकृति पर चाहिए, और जीतना काल!
माया से हो निकलना, भवसागर का जाल!!

सभी शरीरों से निकलना, सभी द्वार हो पार!
चक्र भी हो जागृत सभी, तत्व सभी हो पार!!

सभी आत्मा है नहीं, सभी है केवल जीव!
आत्म बनना लक्ष्य है, जीव को बनना पीव!!

परिधि से आना केन्द्र पर, यही जीव का लक्ष्य!
दृष्टि जो बदले जीव की, आत्म हो प्रत्यक्ष!!

चौथे लोक को खोजना, यही जीव का लक्ष्य!
सन्मुख होना दृष्टि से, आत्म हो प्रत्यक्ष!!

एक अद्वैत को खोजना, यही सत्य का पंथ!
आत्म, परमात्म मिले, सभी कह गये ग्रंथ!!

तीन लोक बस में करो, चौथे लोक निवास!
जीव हो सन्मुख आत्म के, सब सुख तेरे पास!!

"" जीव किसका दास बने किसके सन्मुख हो ""

**आत्म विस्मरण क्यों हुआ, बन गये मन के दास!
चेतन, चेतन खोज ले, चेतन तेरे पास!!**

**तीन लोक में मन का मत है, इसे काल मत जानों!
चौथा लोक आत्मा का है, इसे आत्म मत मानो!!**

**मन का मत तू छोड़कर, आत्म का मत धार!
जीव हो सन्मुख आत्म के, यही भेद है सार!!**

**वेद, शास्त्र सब कह गये, केवल आत्म जान!
यही सभी का सार है, इसको तू पहिचान!!**

**तन, मन, सुरत साधना करते, यह मन का मत मानो!
आत्म बोध, आत्मा का मत, केवल दृष्टि से जानो!!**

**तन, मन, सुरत साधना करते, आत्म बिमुख है जानो!
जीव हो सन्मुख आत्म के जब, तभी है सन्मुख मानों!!**

**आत्म मत " दृष्टि " का मत है, प्रकट आत्मघट होय!
धार आत्मा की गिरे, जीव पूर्ण तब होय!!**

"" जानना केवल आत्मा को है ""

**अचल, अलौकिक आत्मा, पूर्ण अकर्ता होय!
कोई परिवर्तन नहीं, यही सत्यपद होय!!**

**तन, मन, सुरत यह तीन पद, यह माया पद मान!
इनमें परिवर्तन सदा, मन है मालिक जान!!**

**तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा, सत्यनाम सतगुरु गति चीन्हा!
नाम तो है सतगुरु आधीना, बिन सतगुरु कोई नाम न चीन्हा!!**

**केवल सत्य को जानना, यही गूढ़ है मर्म!
वेद, शास्त्र का सार यह, सत्य सनातन धर्म!!**

**आवश्यकता सब जीव की सत्य से पूर्ण होय!
लक्ष्य जीव का सत्य है, सत्य के सन्मुख होय!**

**सभी आत्मा हैं नही, सभी है केवल जीव!
लक्ष्य है बनना आत्मा, जीव से बनना पीव!!**

**व्यापक सर्व है आत्मा, यह सबका आधार!
केवल मनुज में प्रकट हो, आत्म घट है सार!!**

**पहले से यह प्रकट नहिं, प्रकट मनुज में होय!
आत्म घट तब प्रकट हो, जीव जो सन्मुख होय!!**

**प्रकट आत्मा होत नहिं, प्रकट आत्मघट होय!
धार आत्मा की गिरै, आत्मघट पर सोय!!**

**सहज दृष्टि से जीव जो, केन्द्र के सन्मुख होय!
आत्मघट भी प्रकट हो, काज पूर्ण सब होय!!**

"" ब्रम्ह कौन है ""

**ब्रम्ह प्रकृति और लोक सब, सत्य की छाया होय!
यदि इनको हो पकड़ना, सत्य पकड़ना होय!!**

**संचालित है कर रहा, तीन लोक को ब्रम्ह!
ब्रम्ह है छाया आत्म की, आत्म चेतन स्वयं!!**

**चेतन सत्य है आत्मा, ब्रम्ह तो है प्रतिबिम्ब!
उसके नीचे लोक सब, हैं बिम्बों के बिम्ब!!**

**कर्ता पुरुष और मैं यही, दृष्टा पुरुष है ब्रम्ह!
सब कुछ यही है कर रहा, तीन देव मिल ब्रम्ह!!**

**तीन लोक में है बड़ा, मनुज शरीर में जीव!
तीन लोक चेतन यही, लक्ष्य जीव का पीव!!**

**नम्बर दो पर है बड़ा, तत्वों में आकाश!
ब्रम्ह इसी का नाम है, शब्द रूप में भास!!**

ब्रम्ह और माया साथ में, यह पद द्वैत है जान!

प्रकटा है अद्वैत से, पुरुष प्रकृति दो मान!!

आधार ब्रम्ह का आत्मा, छाया केवल ब्रम्ह!

दृष्टा, सृष्टा मैं यही, सब में व्यापक ब्रम्ह!!

किरण आत्मा की पड़े, छाया सुरत पे जान!

ब्रम्हा, विष्णु कोटिन भये, कोटिन शिव भगवान!!

कोटिन तो ब्रम्हा भये, कोटिन भये है ईश!

साहव तेरी साहवी, जीव भयो जगदीश!!

निज की शक्ति है नहीं, किसी तत्व में मान!

ब्रम्ह तत्व आकाश है, माया द्वैत है जान!!

" "मैं को छोड़ने के लिए तन, मन, सुरत की
भक्ती छोड़ना है" "

जब मैं था तब हरि नहीं, जब हरि है मैं नाहिं!
मैं को छोड़ो हरि मिले, जीव पूर्ण ह्वै जाइ!!

सन्मुख होते मूर्ति के, आत्म सन्मुख नाहिं!
मूर्ति को मैं ही देखता, मैं को छोड़े नाहिं!!

मैं और मूर्ति द्वैत है, भेद भक्ति यह होय!
मैं को ही है छोड़ना, सन्मुख हरि के होय!!

मैं ही प्रकाश को देखता, दृष्टा कर्ता मैं!
तब तक तुम सन्मुख नहीं, जब तक कर्ता मैं!!

अनहद मैं ही सुन रहा, इसमें कर्ता मैं!
सन्मुख होना जीव को, सन्मुख क्यों है मैं!!

**मैं ही माया द्वैत है, यह तीनों पद द्वैत!
इनसे आत्म न मिले, खोजो तुम अद्वैत!!**

**तन, मन, सुरत में क्यों पड़ा, मैं को छोड़े जीव!
सन्मुख होना आत्म के, जीव को बनना पीव!!**

**मैं छोड़े आत्म मिले, जीव पूर्ण हूँ जाय!
मोक्ष, मुक्ति सब ही मिले, खुद ही सब सधि जाय!!**

**कुछ भी करना है नहीं, कर्ता मैं ही होय!
जो इस मैं को छोड़ दे, आत्म जाने सोय!!**

""बोध और प्रबोध ""

सन्मुख होना केन्द्र के, और जानना आत्म!
यही जीव का लक्ष्य है, इसे कहें अध्यात्म!!

जीव जो जाने आत्म को, कहते इसे है बोध!
मन जो जाने आत्म को, कहते इसे प्रबोध!!

ENLIGHTENMENT मन का हो, जीव का कायाकल्प!
आत्म जाने होत है, और नहीं है विकल्प!!

मन कौवा से हंस हो, जानों केवल आत्म!
जीव अवस्था पीव हो, दोनों हो एकात्म!!

तन, मन, सुरत को थिर करो, केन्द्र के सन्मुख जीव!
सहज दृष्टि हो जीव की, जीव तुरत हो पीव!!

वस में हो सब इन्द्रियाँ, मन भी थिर ह्वै जाय!
स्थिर होवे सुरत भी, जीव केन्द्र पर जाय!!

करना कुछ भी है नहीं, केवल सहज हो दृष्टि!
सब परिवर्तन स्वयं हो, तुरत पार हो सृष्टि!!

यही अवस्था पूर्ण है, यही परमपद जान!
दृष्टि जो बदले जीव की, पावै पद निर्वाण!!

"" भेद - अध्यात्म "" [भावार्थ]

1. पूरा अध्यात्म चार भागों में बटाँ है!
 2. चार लोक हैं-- तन, मन, सुरत और आत्मा!
 3. चार युग हैं--
 - (I) आत्मा - सतयुग
 - (II) सुरत - त्रेता [तीन देव ब्रम्हा, विष्णु, शिव का निवास स्थान]
 - (III) मन - द्वापर
 - (IV) शरीर - कलयुग
 4. दृष्टि चार हैं--
 - (I) शरीर की दृष्टि - दो आँखे
 - (II) मन की दृष्टि - तीसरी आँख
 - (III) सुरत की दृष्टि - प्रज्ञा चक्षु [यहाँ बैठे हो चौराहा देख रहे हो]
 - (IV) जीव की दृष्टि - जीव की दो आँखे हैं---
 - (I) सत
 - (II) विवेक
- परन्तु दोनों आँखे बन्द हैं, इसलिए यह अज्ञानी है!
आँखे खोलना जीव का प्रथम लक्ष्य है!

- (I) आँखे इसलिए बन्द है कि यह आत्मा से विमुख है!
- (II) आत्मा के सन्मुख होना है, तब आँख खुलेगी!

5. आत्मा:- आत्मा केवल एक है, उसी के नाम अनेक हैं!

[1] राधास्वामी मत में आत्मा को ही राधास्वामी कहा गया है, जो लोग प्रकाश को आत्मा मानते है वह धोखे में हैं! क्योंकि प्रकाश में:-----

(I) सात रंग के प्रकाश है, जबकि आत्मा रंग, रूप, रेखा से न्यारा है!

(II) सात खण्डों में प्रकाश है, जबकि आत्मा अखण्ड है!

(III) प्रकाश में गति होती है, जबकि आत्मा अचल है!

(IV) एक प्रकाश को पार करके दूसरा प्रकाश मिलता है जबकि आत्मा अपार है!

(V) प्रकाश स्वर्ग लोक है जबकि आत्मा का कोई लोक नहीं है!

(VI) प्रकाश में परिवर्तन होता रहता है! "जो बदले वह माया" अतः प्रकाश माया है जबकि आत्मा अमाया है!

- (2) कबीर मत में उसे 'साहव' कहा गया है!
- (3) वैष्णव मत में उसे 'राम' कहा गया है!
- (4) संत मत में उसे 'सत्यनाम' कहा गया है!
- (5) उसका कोई नाम नहीं है इसलिए उसे 'अनामी' कहा गया है!
- (6) वह निर्वाण पद है इसलिए उसे 'निर्वाण' कहा गया है!
- (I) लख्यो रे कोई बिरला पद निर्वाण!
- (II) धर्मदास यह जग वौराना!
कोई न जाने पद निर्वाणा!!
- (7) वह परमपद है इसलिए:---
- (I) उसे परमात्मा कहते हैं!
- (II) जो जीव उस पद में पहुँच जाता है वह परम हो जाता है जैसे--- परमसंत इत्यादि!
- (8) बहुत से नाम उसी एक आत्मा के हैं!

6. चार पद है:---

(I) शरीर:- इससे अष्टांग योग किया जाता है!

(II) मन:- मन से ध्यान किया जाता है!

(III) सुरत:- सुरत से सुरत - शब्द योग किया जाता है!

इसमें अलग- अलग स्थानों के प्रकाश और अनहदनाद को सम किया जाता है! जिससे वह स्थान पार हो जाता है!

(IV) आत्मा:- यही चौथा पद है जो विलुप्त है उसे ही जीव को खोजना है!

(I) आत्मा न शरीर के बाहर है, न शरीर के अन्दर है!

(II) न गुप्त है, न प्रकट है!

(III) यह चौथा पद हमें स्पर्श भी नहीं करता है, क्योंकि यह शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध से न्यारा है!

(IV) सद्गुरु खोजकर इसका भेद जानकर आत्मघट प्रकट किया जाता है! उसी पर आत्मा की धार गिरने लगती है और जीव की दोनों आँखें खुल जाती हैं! जीव पूर्ण हो जाता है!

7. "मैं" के तीन पद हैं इन्हें ही साधना में छोड़ना है!
क्योंकि इनमें "मैं" कार्य करता है! जब तक "मैं" कार्य
करेगा! तब तक आत्मघट प्रकट नहीं होगा!

(I) तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा!
सत्यनाम, सतगुरु गति चीन्हा!!

** गति चीन्हा का अर्थ:- वह पद अचल है! उसमें
कोई गति नहीं होती है!

(II) नाम रहे चौथे पद माहीं!
तुम ढूँढो त्रिलोकी माहीं!!

(III) चार पैर हैं धर्म के, कलि में एक विलुप्त!
तीन पैर से चल रहा, जीव हो कैसे मुक्त!!
तीन पद तन, मन, सुरत को छोड़ना है क्योंकि इनमें
कर्ता "मैं" है!

(I) " मैं " ही देखता है:---

शरीर में - आँखों से "मैं" देख रहा है!

मन में - तीसरी आँख से "मैं" देख रहा है!

सुरत में - प्रज्ञा चक्षु से "मैं" देख रहा है!

" जब 'मैं' था तब हरि नहीं, जब हरि है मैं नाहिं!

जीव जो छोड़े तीन पद, मुक्त होई छण मांहि!!

तन,मन, सुरत से मुक्त हो, जीव अवस्था से मोक्ष!

दृष्टि जीव की खोलना, सन्मुख हो प्रत्यक्ष!!

8. जीव आत्मा का अंश है!
9. आत्मा अतत्त्व है, जीव तत्त्व रूप में हो गया!
10. जीव शरीर में रह रहा है, आत्मा चौथे लोक में है!
11. जीव की दोनों आँखे सत और विवेक की अभी बन्द है, अभी यह सो रहा है!
12. जीव प्राण रूप में, प्राणवायु के रूप में, शरीर में गुदा केन्द्र पर स्थित है!
13. शरीर में मन प्रधान है:- इसलिए इसे मनुष्य कहते हैं!
14. जीव प्राण रूप में स्थित है:- इसलिए प्राणी कहते हैं!
15. मन में डार्क एनर्जी है, इसलिए इसे कौवा कहते हैं, इसे हंस बनना है!

16. जीव को आत्मा बनना है, जिसका अंश है वही बनना है, इसी अवस्था परिवर्तन को मोक्ष कहते हैं!
17. जीव और मन दोनों को केवल आत्म के सन्मुख करना है, तुरत ही:-

(I) जीव आत्मा बन जायेगा!

(II) मन कौवा से हंस हो जायेगा! ENLIGHTENMENT हो जायेगा!

जानति तुमहि तुमहि होइ जाई!

18. सुरत की दृष्टि स्थिर और सहज कर देनी है!
- निशाना केवल एक पर होना चाहिए!

सुरेशादयाल
ब्रम्हज्ञान योग संस्थान
मोचकला बिसवाँ सीतापुर

उ० प्र०

सम्पर्क सूत्र:- 9984257903